HIN3B18a_cours-04-2013-02-21-Nirmal Varma

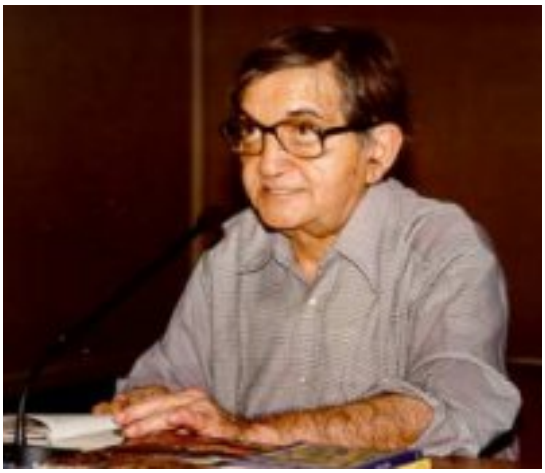

निर्मल वर्मा (3/4/1929 - 25/10/ 2005)

निर्मल वर्मा हिन्दी के आधुनिक साहित्य में प्रमुख कथाकार और पत्रकार थे। निर्मल वर्मा का जन्म शिमला में हुआ। निर्मल वर्मा को 'मूर्तिदेवी पुरस्कार' (1995), 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' (1985), 'उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान पुरस्कार' और 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' (1999) से सम्मानित किया गया। 'निर्मल वर्मा की संवेदनात्मक बुनावट पर हिमांचल की पहाड़ी छायाएँ दूर तक पहचानी जा सकती हैं।

दिल्ली के 'सेंट स्टीफेंस कालेज' से इतिहास में एम.ए. करने के बाद कुछ समय तक उन्होंने अध्यापन किया। 1959 से प्राग (चेकोस्लोवाकिया) में सात वर्ष तक रहे। उसके बाद लन्दन में रहते हुए 'टाइम्स आफ इंडिया' के लिये सांस्कृतिक रिपोर्टिंग की। प्राग और लन्दन में लम्बा समय गुज़ार कर निर्मल वर्मा ने यूरोप के जीवन की विसंगतियों को समझने की कोशिश की। उन्होंने इन विसंगतियों की बहुत ही बारीक मानवीय व्याख्या अपनी कहानियों में की है। वे 1972 में भारत लौटे। उनकी कहानी 'माया दर्पण' पर फिल्म बनी जिसे 1973 का सबसे अच्छी हिन्दी फिल्म का पुरस्कार प्राप्त हुआ। 'रात का रिपोर्टर', 'एक चिथड़ा सुख', 'लाल टीन की छत' और 'वे दिन' उनके बहुचर्चित उपन्यास हैं। उनका अन्तिम उपन्यास 1990 में प्रकाशित हुआ था – 'अंतिम अरण्य'। उनकी एक सौ से अधिक कहानियाँ कई संग्रहों में प्रकाशित हुई हैं जिनमें 'परिंदे', 'कौवे और काला पानी', 'बीच बहस में', 'जलती झाड़ी' आदि प्रमुख हैं। 'धुंध से उठती धुन' और 'चीड़ों पर चाँदनी' उनके यात्रा वृतांत हैं जिन्होंने लेखन की इस विधा को नए आयाम दिए हैं।

निर्मल वर्मा को उनकी गम्भीर, भावपूर्ण और अवसाद से भरी कहानियों के लिए जाना जाता है। वे आधुनिक हिन्दी कहानी के प्रसिद्ध लेखकों में गिने जाते हैं। उनके लेखन की शैली सबसे अलग और एकदम निजी है। उनकी बातचीत में एक खास तरह का हास्य होता है, साथ ही झगड़ा और सुलह भी। निर्मल वर्मा मानवीय सम्बन्धों, प्रकृति, नियति, नश्वरता के अँधेरे-उजालों के गाथाकार हैं। वह पाठक को मानव मन की गहराई में ले जाते हैं और इस से ही उनकी कथा की सीढ़ियाँ बनती हैं। अगर फणीश्वरनाथ रेणु के गद्य को ध्वनिमय कहा जाता है तो निर्मल के गद्य को चित्रमय कहा जाना ठीक होगा। निर्मल का लेखन चित्रमय ही नहीं, चलचित्रमय भी है। हिन्दी गद्य में ऐसा चित्रकार बहुत कम देखने को मिलता है।